महात्मा बुद्ध

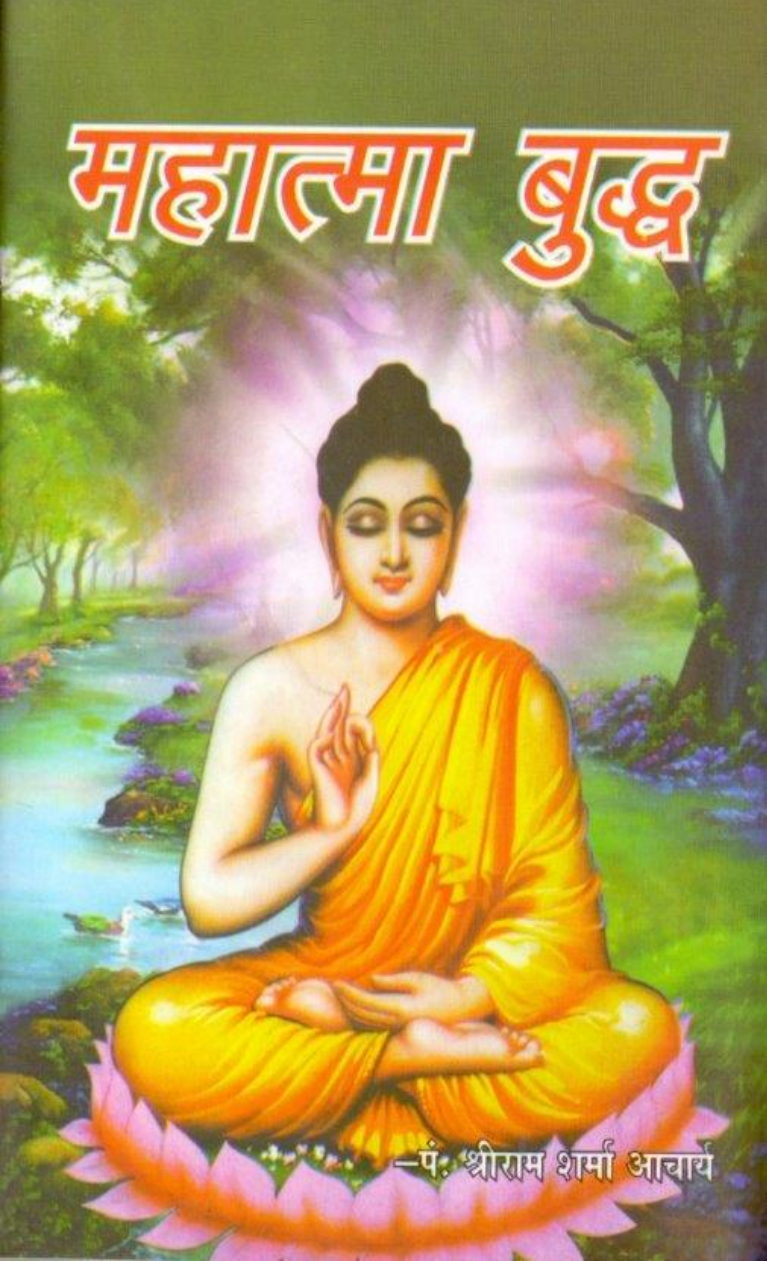

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

लोक कल्याण के व्रती— महात्मा बुद्ध

ढाई हजार वर्ष पुरानी बात है। कपिलवस्तु नगरी के राजमार्ग पर एक बुड्ढा भिखारी चला जा रहा था। जरावस्था ने उसकी कमर को झुका दिया था, नेत्रों की ज्योति को क्षीण कर दिया था, दाँतों को गिरा दिया था और पैरों को लड़खड़ाकर चलने वाला बना दिया था। वह रोटी के एक टुकड़े के लिए पुकार मचा रहा था, पर रोटी देने के बदले कितने ही शरारती बालक उसके पीछे पड़ गए थे और तरह-तरह से छेड़कर उसे तंग कर रहे थे। इतने में एक राजकीय रथ चलते-चलते उसके पास रुका और उसमें से एक देव-कांति वाला युवा पुरुष उतरकर उस भिखारी को ध्यानपूर्वक देखने लगा। उसने अपने सारथी से पूछा कि—यह कौन है और इसकी यह दुर्दशा क्यों हो रही है ? तब उसे मालूम हुआ कि यह एक बुड्ढा आदमी है, जो शरीर के अशक्त हो जाने से जीविकोपार्जन में असमर्थ हो गया है और भूख की व्यथा को दूर करने के लिए इधर-उधर रोटी माँगता फिरता है। राजकुमार को यह एक अनोखा दृश्य जान पड़ा, क्योंकि उसने आज से पहले किसी दीन-दुःखी वृद्ध पुरुष को नहीं देखा था। उसको अभी तक जिस वातावरण में रखा गया था, उसमें सुख और आनंददायक श्रेष्ठ दृश्यों के अतिरिक्त उसे कभी दैन्य, कष्ट, रोग-शोक की घटनाओं को देखने का अवसर ही नहीं मिला। आज संयोग से मार्ग में चलते हुए ऐसी जर्जर और निकृष्ट अवस्था में पहुँचे हुए व्यक्ति को देखकर उसकी आँखें खुल गईं। यह राजकुमार गौतम थे, जो आगे चलकर महात्मा बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए।

गौतम शाक्य वंशीय राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। उनकी माता महामाया उनको सात दिन का ही छोड़कर मर गई थीं और उनका लालन-पालन सेवक और दासियों द्वारा किया गया था। इनके जन्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के समय किसी ज्योतिषी ने कह दिया था कि—ये आगे चलकर यदि घर में रहे तो एक पराक्रमी सम्राट् बनेंगे और जो गृह त्यागी हो गए तो बड़े धर्म प्रचारक और लोकसेवी सिद्ध होंगे। इस भविष्य कथन से राजा शुद्धोदन का हृदय शंकाकुल हो गया था और उन्होंने यह व्यवस्था कर रखी थी कि राजकुमार को सदैव अत्यंत सुख और प्रसन्नता के वातावरण में रखा जाए और उनके सामने सांसारिक दुःख, रोग-शोक की चर्चा भूलकर भी न की जाए। यही कारण था कि राजभवन के दास-दासी उनको सदैव आमोद-प्रमोद और मनोरंजन में लगाए रहते थे और संसार की वास्तविक अवस्था के संपर्क में उनको कभी नहीं आने दिया जाता था।

गौतम का विचार-मंथन

इसी से जब अकस्मात् एक दिन उन्होंने एक जराग्रस्त, दीन-दुःखी भिखारी को देखा तो उसकी बड़ी गहरी प्रतिक्रिया हुई। अभी तक तो वे संसार के सब लोगों को अपनी ही तरह सुखी और आमोद-प्रमोद में जीवन व्यतीत करने वाला समझते थे, पर जब उनको अनुभव हुआ कि संसार का वास्तविक रूप ऐसा नहीं है और उसमें अनगिनत व्यक्ति अभावग्रस्त, कष्टपूर्ण और तरह-तरह की व्याधियों से व्याकुल जीवन व्यतीत करते हैं तो उनके कोमल हृदय को बड़ा धक्का लगा और वे इस समस्या का मनन करने तथा उसके प्रतिकार का उपाय ढूँढ़ने लगे।

गौतम का हृदय आरंभिक अवस्था से ही सब प्राणियों के लिए संवेदनशील था और वे किसी का कष्ट नहीं देख सकते थे। इस संबंध में एक उपाख्यान बहुत प्रसिद्ध है कि, एक दिन उनके एक निकट संबंधी देवदत्त ने बाण चलाकर उड़ते हुए हंस को घायल कर दिया और वह पंख फड़फड़ाता हुआ गौतम के पास ही आ गिरा। उसे देखकर इनके मन में बड़ा करुणा-भाव उत्पन्न हुआ और वे तुरंत ही उसे उठाकर शरीर पर हाथ फेरने लगे। इतने में देवदत्त आ पहुँचा और उसने अपना मारा हुआ हंस माँगा, पर इन्होंने देने से इनकार किया और अंत में यह विवाद राजा शुद्धोदन के समीप पहुँचा। वहाँ पर गौतम ने यह दलील दी कि—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मारने वाले से बचाने वाला सदैव बड़ा हुआ करता है, इसलिए इस हंस पर देवदत्त का नहीं मेरा अधिकार है और मैं इसकी प्राण रक्षा करूँगा। इनका यह कथन सबने ठीक बतलाया और यह भी अनुभव किया कि जब ये एक पक्षी के प्रति इतनी आत्मीयता का भाव रखते हैं तो संसार में पीड़ित मानवता के प्रति कल्याण-भावना क्यों न रखेंगे ?

इनके पिता ने इनकी गंभीर मनोवृत्ति को देखकर शीघ्र ही इनका विवाह यशोधरा नाम की राजकुमारी से कर दिया था, जो बड़ी सुंदर और पतिपरायणा थी। वह भी उनको सदा राजमहलों के वैभवशाली और आमोदयुक्त जीवन में लुभाए रखने की चेष्टा किया करती थी, तो भी जैसे-जैसे बुद्ध को निरीक्षण और मनन द्वारा संसार की वास्तविक अवस्था का ज्ञान होता गया, उनको उस राजसी जीवन से विरक्ति होती गई। वे अपने मन में यही सोचा करते थे कि—जब संसार में हमारे ही आस-पास के स्थानों में इतने अधिक व्यक्ति भोजन, वस्त्र, मकान, औषधि, परिचर्या के बिना कष्ट सहन कर रहे हैं तो मुझे इन सुरम्य महलों में रंगरलियाँ मनाने का क्या अधिकार है ? यह कहाँ की मानवता है कि एक तरफ तो अनेक नरतनधारी भूखे, नंगे, रोगी, पीड़ित पड़े कराह रहे हों और दस-बीस राजवंशीय व्यक्ति सुरा और सुंदरियों का आस्वादन करते हुए असंख्य धन तथा मानव-श्रम की बर्बादी कर रहे हों ? नहीं, यह स्पष्ट अन्याय है। जब तक सबको साधारण जीवन-निर्वाह की सुविधा न मिल जाए, तब तक किसी को यह अधिकार नहीं कि वह सार्वजनिक धन और जीवनोपयोगी सामग्री का ऐसा दुरुपयोग करे।

राजकीय बंधनों का त्याग

गौतम की यह विचारधारा क्रमशः परिपक्व होती चली गई। यद्यपि उनके पिता राजा शुद्धोदन ने भरसक इस बात का प्रयत्न किया कि राजकुमार के सामने संसार की दुर्दशा का कोई चित्र न आने पाये, न उनको ज्ञान-वैराग्य की बातों को सुनने का अवसर दिया जाए तो भी गौतम ने दो-चार बार सयोग से जो दीन, दुःखी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोगी और मृत व्यक्तियों को देख लिया उसी से उनके भीतर विचारमंथन आरंभ हो गया और अपनी तर्क-बुद्धि तथा न्याय-पथ पर चलने वाली मनोभावना के द्वारा उन्होंने शीघ्र ही यह समझ लिया कि अगर संसार से इस अन्याय और दुरावस्था को मिटाना है तो इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता यही है कि इस राजपाट के झंझट और बंधन को दूर हटाया जाए, क्योंकि जब तक इसमें रहा जाएगा तब तक पीड़ित मानवता की सेवा-सहायता करना तो दूर उनके निकट जा सकना भी संभव नहीं हो पाएगा। इसलिए उन्होंने महलों में रहते हुए भी अपने जीवन को सादा बनाना आरंभ कर दिया और राज्य के बंधनों को तोड़कर स्वतंत्र होने का निश्चय कर लिया।

कुछ समय पश्चात् जब यशोधरा ने एक पुत्र को जन्म दिया, तब गौतम पर इसकी प्रतिक्रिया भिन्न रूप में ही हुई। एक तरफ तो समस्त राज्य में हर्षोल्लास और मांगलिक उत्सवों की धूम मची हुई थी और दूसरी ओर गौतम इसे एक नए बंधन के रूप में अनुभव कर रहे थे। वे सोचते थे कि अभी तक तो हम स्त्री और पिता के प्रेम के कारण घर को न छोड़ सके, अब यदि इस पुत्र का प्रेम भी बढ़ गया तो गृहत्याग करके अपने को विश्व कल्याण के कार्य के लिए समर्पित कर देना और भी कठिन हो जाएगा। इसलिए उन्होंने शीघ्र से शीघ्र राजसी जीवन को त्यागने का निश्चय कर लिया और जिस दिन उनका पुत्र राहुल सात दिन का ही था, वे आधी रात के समय चुपचाप घर को छोड़कर चल दिए। यह मार्ग उनको इसलिए अपनाना पड़ा, क्योंकि उनके पिता राज्य की मर्यादा के ख्याल से इस बात की अनुमति देने को कदापि तैयार न थे और हर तरफ से यह प्रयत्न कर रहे थे कि गौतम राजभवन से बाहर न जा सकें। उधर गौतम के मन में प्रतिदिन यह धारणा बलवती होती जाती थी कि—यदि मैं अन्य लोगों की तरह विषय-भोग में ही लगा रहा और अपनी ईश्वर-प्रदत्त शक्तियों को लोक-कल्याण के लिए उपयोग में न ला सका तो यह एक बहुत बड़ा प्रमाद या अपराध होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गौतम के समय की सामाजिक अवस्था

महात्मा गौतम बुद्ध के समय भारतीय समाज की दशा बड़ी शोचनीय हो गई थी और बहुसंख्यक जनता हीन श्रेणी का जीवन व्यतीत कर रही थी। समाज के अगुआ और पूज्य माने जाने वाले ब्राह्मण, जिन्होंने किसी समय अपनी त्याग और तपस्या के बल पर इस देश में रहने वालों को ही नहीं, संसार के अनेक देशों को कर्तव्य परायणता, परोपकार, सेवा-धर्म, अनासक्ति आदि सद्‌गुणों की शिक्षा दी थी और जन-समुदाय को बुराइयाँ त्यागकर सच्चा धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी थी, वे ही अब तुच्छ स्वार्थ के वशीभूत होकर केवल खाने-कमाने में तल्लीन हो गए थे। अपने स्वार्थ-साधना के लिए उन्होंने यज्ञीय कर्मकांडों को बहुत बढ़ा दिया था और उनमें अधिकाधिक पशुओं की हिंसा कराके वीभत्सता का वातावरण उत्पन्न कर दिया था, वे अपनी पुरानी पदवी के कारण समाज पर अनुचित दबाव डालकर समाज में असमानता और अव्यवस्था की वृद्धि कर रहे थे, जिसके फल से समस्त देश का पतन होने लगा था। इस प्रकार समाज की प्रगति के लिए किसी प्रकार का उपयोगी कार्य न करते हुए भी, केवल ढोंग। और जनता के अज्ञान के आधार पर वे अपना स्वार्थ-साधन कर रहे थे। जब समाज के अगुआओं की यह दशा थी तो अन्य लोगों से अपने धर्म-कर्तव्यों के उचित रूप में पालन करने की आशा कैसे की जा सकती थी ?

इसका परिणाम यह हुआ था कि—'यज्ञ' जैसे महान् आध्यात्मिक और त्यागमूलक धर्म-कार्य ने एक व्यवसाय का रूप धारण कर लिया था। उससे लाभ उठाने वाले ब्राह्मण तरह-तरह से राजाओं और बड़े लोगों को बहकाकर, उनमें प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करके, बड़े-बड़े यज्ञोत्सवों का आयोजन कराते थे और उसमें गरीब प्रजा के पसीने की कमाई का लाखों रुपया बर्बाद करा देते थे। सबसे बुरी बात यह थी कि उन्होंने बलिदान की प्रथा को इतना अधिक बढ़ा दिया था कि ये 'यज्ञ उत्सव' धर्म-भावना की वृद्धि के बजाय एक प्रकार के कसाईखाने बन गए थे। एक-एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञ में जब चार-पाँच सौ बकरे-भेड़ों को खुलेआम काटा जाता होगा, तब वहाँ पर कैसा नर्क के समान दृश्य उपस्थित हो जाता होगा और उसका उपस्थित जनसमूह पर कैसा हानिकारक प्रभाव पड़ता होगा ? इसकी कल्पना सहज में ही की जा सकती है।

धर्म के पतन तथा भ्रष्टता के साथ ही इसका एक दुष्परिणाम यह भी हुआ था कि समाज के निम्न वर्ग शूद्र और कृषिकार्य करने वाले लोगों का जीवन-निर्वाह कठिन होता जाता था। यज्ञों का खर्च बहुत बढ़ गया था और उनके प्रदर्शन तथा निरर्थक रूढ़ियों की पूर्ति के लिए लाखों लोगों का समय तथा सामग्री को नष्ट किया जाता था। इस सबका भार निम्न वर्ग पर ही पड़ता था। ब्राह्मणों के दंभ और राजाओं के शस्त्रबल के भय से उनको सब प्रकार के अन्याय सहन करके भी 'यज्ञों' के व्यर्थ पर महँगे उत्सवों की पूर्ति करनी पड़ती थी, चाहे इसके कारण उनको तथा उनके बच्चों को आधा पेट खाकर ही क्यों न गुजर करनी पड़ती हो, इससे उन लोगों में एक असंतोष तथा विद्रोह की भावना भी उत्पन्न हो रही थी, यद्यपि किसी उचित अवसर के अभाव से वह अभी अप्रकट ही था।

समाज की इसी संकटपूर्ण और गिरती हुई दशा ने गौतम और उनके जैसे मनस्वी कुछ अन्य व्यक्तियों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया था। देश में जगह-जगह इसका विरोध करने वाले कुछ व्यक्ति और छोटे-छोटे समुदाय उत्पन्न हो रहे थे। यद्यपि तात्कालीन सामाजिक व्यवस्था के कारण ऐसे लोग साधु, संन्यासी, तपस्वियों के रूप में रहते थे, पर वास्तव में वे उस समय के आंदोलनकारी ही थे। उनकी मान्यता थी कि कोरे कर्मकांड और यज्ञादि से किसी मनुष्य की आत्मोन्नति नहीं हो सकती और जब तक मनुष्य की आत्मा जाग्रत् नहीं होती, वह आत्मतत्त्व को समझकर सब प्राणियों में एक ही 'परमात्मा' के दर्शन नहीं करने लगता, तब तक वह मुक्ति का अधिकारी नहीं बन सकता। ये लोग अपने सिद्धांत का प्रचार भी करते थे, पर ब्राह्मणों के प्रभाव के सामने उनके प्रयत्नों का कोई परिणाम नहीं होता था। पर जब गौतम जैसे उच्च श्रेणी के और लोक कल्याण के व्रतधारी इस मार्ग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर आगे बढ़े और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रोणोत्सर्ग के लिए उद्यत हो गए तो फिर उन्होंने समाज का नक्शा ही बदल दिया।

गृह त्याग और तपस्या

गौतम के गृह त्याग का वर्णन बौद्ध ग्रंथों में बड़े विस्तार से और प्रभावशाली ढंग से किया है। आधुनिक योरोपियन विद्वानों ने भी उसके संबंध में अपनी सम्मति बड़े प्रशंसनीय रूप में प्रकट की है। वास्तव में उनका यह कार्य था भी ऐसा ही। यही कारण है कि आज २५०० से भी अधिक वर्ष बीत जाने पर करोड़ों व्यक्ति उससे प्रेरणा ग्रहण करते रहते हैं। इस घटना का इनके एक जीवन चरित्र में मार्मिक उल्लेख आता है।

जब राहुल सात दिन का हो गया तो उसी दिन गौतम का हृदय अत्यंत चंचल हो उठा। संसार का सारा सुख उन्हें काटने को दौड़ता था। चारों ओर आधि-व्याधि की प्रचुरता दीख पड़ती थी। उसी दिन अर्धरात्रि को वे उठ खड़े हुए। उस समय उनकी सेविकाएँ अर्धनग्न अवस्था में सो रही थीं, जिसे देखकर उनको और भी विरक्तता हो गई। गौतम अब घर में नहीं रह सके। उन्होंने चुपके से अपने सारथी चंडक (छन्नक) को जगाया और अपने प्यारे घोड़े 'केतक' को लाने की आज्ञा दी। सारथी यह सुनकर आश्चर्य में आ गया। उसने गौतम को इस समय घूमने को मना किया, पर राजकुमार ने न माना। राजमहल छोड़ने से पहले एक बार गौतम अपनी स्त्री के शयनागार में गए, किंतु उस समय उनकी स्त्री पुत्र के मुख पर हाथ रखकर सो रही थी। जाग जाने के डर से उन्होंने उसका हाथ न हटाया। उस समय यशोधरा भी अपार रूपवती जान पड़ रही थी। पर गौतम अपने हृदय को पक्का करके स्त्री और पुत्र की ममता को त्यागकर बाहर निकल आए और जंगल की तरफ रवाना हो गए।

जंगल में पहुँचकर वे घोड़े से उतर पड़े और चंडक से कहा—"अब तुम इसे लेकर नगर को लौट जाओ।" चंडक ने भी गौतम से बहुत अनुनय-विनय की, कि वे उसे ऐसी कठिन परीक्षा में न डालें और राजमहल वापस लौट चलें, पर वे अपने निश्चय से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टस से मस न हुए और जंगल में अग्रसर होते चले गए, प्रातःकाल होने पर उन्होंने अपने वस्त्र एक भिखारी से बदल लिए और तलवार से अपने घुँघराले लंबे केशों को काट डाला। इसके बाद धर्म का निश्चय करने के लिए पागल की तरह इधर-उधर घूमने लगे। एक स्थान पर उन्होंने यज्ञ होते देखा, जिसमें वेदी के निकट बहुसंख्यक पशुओं को बलिदान दिया जा रहा था और चारों ओर रक्त ही रक्त दिखाई पड़ रहा था। यह दृश्य देखकर उनको बड़ी वेदना हुई और वे अपने मन में विचार करने लगे।

"ये लोग सोचते होंगे कि हम धर्म कर रहे हैं, पर ये नहीं जानते कि ये इस समय महान् नीचता का कार्य कर रहे हैं। कहीं ऐसे 'धर्म' से मन को शांति मिल सकती है ? चित्त निर्मल हो सकता है ? यह सब पेट भरने की कला है।"

गौतम फिर जंगल में पहुँच गए और दो तपस्वी ब्राह्मणों के पास रहकर वेदादि ग्रंथों का अध्ययन करने लगे, पर जब एक वर्ष तक वेदाध्ययन से भी उनको शांति प्राप्ति के कुछ लक्षण दिखाई न पड़े तो वे अन्य पाँच व्यक्तियों के साथ घोर तपश्चर्या करने के निमित्त दूसरे घने जंगल में चले गए।

इस प्रकार वे विभिन्न सिद्धांतों के अनुयायी साधुओं के पास रहकर कई वर्ष तक तप करते रहे, जिससे उनका शरीर बहुत दुर्बल हो गया और कार्य शक्ति भी बहुत घट गई, पर इससे न तो उनके मन की समस्याओं का समाधान हुआ और न उनको आत्मिक शांति ही मिल सकी। अंत में वे इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि केवल गृह त्यागकर वन में निवास करने और स्वेच्छा से शारीरिक कष्ट सहन करने से ही ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसके लिए आवश्यक है कि पूर्वाग्रहों की चिंता न करके संसार की स्थिति और समस्याओं पर उदार भाव से विचार किया जाए और बुद्धिसंगत तथा तर्कयुक्त निर्णय को स्वीकार किया जाए। इस मार्ग पर चलने से उनके हृदय में सत्यज्ञान का उदय हुआ। कहा जाता है कि यह ज्ञान उनको वर्तमान गया नगर के समीप एक बरगद के वृक्ष के नीचे निवास करते हुए प्राप्त हुआ, जिससे उसका नाम 'बोधि वृक्ष'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ गया। आगे चलकर वह स्थान बुद्ध मत वालों का प्रधान तीर्थ स्थान बन गया।

गौतम बुद्ध के सिद्धांत

सच्चा आत्मबोध प्राप्त कर लेने पर इनका नाम 'बुद्ध' पड़ गया और उन्होंने संसार में उसका प्रचार करके लोगों को कल्याणकारी धर्म की प्रेरणा देने की इच्छा की। इसलिए गया से चलकर वे काशीपुरी में चले आए, जो उस समय भी विद्या और धर्म चर्चा का एक प्रमुख स्थान थी। यहाँ सारनाथ नामक स्थान में ठहरकर उन्होंने तपस्या करने वाले व्यक्तियों और अन्य जिज्ञासु लोगों को जो उपदेश दिया उसका वर्णन बौद्ध धर्म ग्रंथों में इस प्रकार मिलता है।

(१) जन्म दुःखदायी होता है। बुढ़ापा दुःखदायी होता है। बीमारी दुःखदायी होती है। मृत्यु दुःखदायी होती है। वेदना, रोना, चित्त की उदासीनता तथा निराशा ये सब दुःखदायी हैं। बुरी चीजों का संबंध भी दुःख देता है। आदमी जो चाहता है, उसका न मिलना भी दुःख देता है। संक्षेप में 'लग्न के पाँचों खंड' जन्म, बुढ़ापा, रोग, मृत्यु और अभिलाषा की अपूर्णता दुःखदायक है।

(२) हे साधुओं ! पीड़ा का कारण इसी 'उदार सत्य' में निहित है। कामना—जिससे दुनिया में फिर जन्म होता है, जिसमें इधर-उधर थोड़ा आनंद मिल जाता है—जैसे भोग की कामना, दुनिया में रहने की कामना आदि भी अंत में दुःखदायी ही होती है।

(३) हे साधुओं ! दुःख को दूर करने का उपाय यही है कि कामना को निरंतर संयमित और कम किया जाए। वास्तविक सुख तब तक नहीं मिल सकता, जब तक कि व्यक्ति कामना से स्वतंत्र न हो जाए अर्थात् अनासक्त भावना से संसार के सब कार्य न करने लगे।

(३) पीड़ा को दूर करने के आठ उदार सत्य ये हैं—सम्यक् विचार, सम्यक् उद्देश्य, सम्यक् भाषण, सम्यक् कार्य, सम्यक् जीविका, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् चित्त तथा सम्यक् एकाग्रता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्यक् का आशय यही है कि—वह बात देश, काल, पात्र के अनुकूल और कल्याणकारी हो।

इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए बुद्ध ने 'तीन मूल बातों' को जान लेने की आवश्यकता बतलाई—

(१) संसार में जो कुछ भी दीख पड़ता है, सब अस्थायी और शीघ्र नष्ट होने वाला है। (२) जो कुछ दीख पड़ता है उसमें दुःख छिपा हुआ है। (३) इनमें से किसी में स्थायी आत्मा नहीं है, सब नष्ट होंगे। जब सभी चीजें नष्ट होने वाली हैं, तब इनके फंदे में क्यों फँसा जाए ? तपस्या तथा उपवास करने से इनसे छुटकारा नहीं मिल सकता। छुटकारे की जड़ तो मन है। मन ही मूल और महामंत्र है। उसको इन सांसारिक विषयों से खींचकर साफ और निर्मल कर दो, तो मार्ग स्वयं स्पष्ट हो जायेगा। राग और कामना (झूठा प्रेम व लालच) न रहने से तुम्हारे बंधन स्वयं टूट जायेंगे।

धर्म का सीधा रास्ता यही है कि शुद्ध मन से काम करना, शुद्ध हृदय से बोलना, शुद्ध चित्त रखना। कार्य, वचन तथा विचार की शुद्धता के लिए ये दस आज्ञाएँ माननी चाहिए—

(१) किसी की हत्या न करना (२) चोरी न करना (३) दुराचार न करना (४) झूठ न बोलना (५) दूसरों की निंदा न करना (६) दूसरों का दोष न निकालना (७) अपवित्र भाषण न करना (८) लालच न करना (९) दूसरों से घृणा न करना (१०) अज्ञान से बचना।

भगवान् बुद्ध ने समझाया कि—जो संसार में रहते हुए इन नियमों का पालन करेगा और सबसे प्रेम-भाव रखते हुए भी राग-द्वेष से अपने को पृथक् रखेगा, वह अपने जीवन-काल में और शरीरांत के पश्चात् भी सब प्रकार के अशुभ परिणामों से मुक्त रहेगा। इस बात की कोई आवश्यकता नहीं कि मनुष्य जंगलों में जाकर तपस्या करे और भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि का कष्ट सहन करे। मुख्य आवश्यकता इस बात की है कि अपने चित्त को संतुलित रखकर किसी के प्रति किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न करे। प्रकट में मीठी बातें करके परोक्ष में, दूसरों के अनहित की चेष्टा करना जघन्य कार्य है। इसलिए सच्चा धार्मिक उसी व्यक्ति को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कह सकते हैं, जो हृदय में प्राणीमात्र के प्रति सद्भावना रखे और उनकी कल्याण-कामना करे। जो किसी से द्वेष नहीं रखेगा, आवश्यकता पड़ने पर पीड़ितों और अभावग्रस्तों की सेवा-सहायता से मुख नहीं मोड़ेगा, कुमार्ग अथवा गर्हित आचरण से बचकर रहेगा, उसे जीवनमुक्त ही समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति कभी भव-बंधन में ग्रसित नहीं हो सकता है।

मगध में 'कस्सप' और 'नादिकस्सप' नाम के दो अत्यंत प्रसिद्ध महात्मा रहते थे, जिनमें से प्रत्येक के यहाँ ५०० शिष्य रहते थे। कुछ समय पश्चात् भ्रमण करते हुए बुद्ध वहाँ पहुँचे और वार्तालाप में इन्होंने महात्माओं को बतलाया कि वे जिस प्रकार तपस्या कर रहे हैं, उससे वास्तविक शांति प्राप्त नहीं हो सकती। जो तपस्या किसी प्रकार के फल की इच्छा रखकर की जाती है, उससे कामना का नाश नहीं होता और बिना कामना के मिटे चित्त की निर्मलता प्राप्त न हो सकेगी। यदि चित्त निर्मल न हुआ तो सभी कुछ व्यर्थ है। उन महात्माओं पर गौतम के उपदेशों का बड़ा प्रभाव पड़ा और वे अपने एक हजार शिष्यों सहित बुद्ध के चेले बन गए।

वहाँ से आगे चलकर बुद्ध राजगृह पहुँचे, जो उस समय मगध-देश की राजधानी थी और जिसका राजा बिंबिसार पहले से ही इनसे परिचित था। जब उसने सुना कि दोनों कस्सप बंधु बुद्ध जी के शिष्य हो गए हैं तो उसे एकाएक विश्वास नहीं हुआ कि इतने बड़े महात्मा थोड़ी आयु वाले बुद्ध जी के अनुयायी बन गए हों। इसलिए उसने अपना एक दूत उन महात्माओं के आश्रम में यह जानने को भेजा कि वे बुद्ध के शिष्य बने हैं या बुद्ध ने उनका शिष्यत्त्व स्वीकार किया है ? जब दूत ने इस संबंध में जिज्ञासा की तो कस्सप ने कहा—

निर्मल अकथ अनादि ज्ञान जिसने है पाया।
उसी ज्योति-भगवान् बुद्ध को गुरु बनाया।।

वास्तव में सत्यज्ञान और सत्य व्यवहार की ऐसी महिमा है कि जिसके आधार पर एक बालक भी वृद्धों का गुरु बन सकता है। बुद्ध ने स्वयं भी अवसर पड़ने पर कई बार अपने शिष्यों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह बतलाया था कि—"बालों के श्वेत हो जाने से कोई पूजनीय और माननीय नहीं हो जाता, वरन् जो ज्ञान-वृद्ध है और तदनुसार आचरण करता है उसी को पूज्य मानना चाहिए।"

बिंबिसार ने बुद्ध का बड़ा स्वागत-सम्मान किया और स्वयं भी उनका शिष्य बन गया। बड़े शासक के इस प्रकार सहायक बन जाने पर बुद्ध का प्रचार-कार्य तेजी से बढ़ने लगा और अपेक्षाकृत थोड़े ही समय में उनको उल्लेखनीय सफलता मिल गई। बिंबिसार का उदाहरण देखकर अन्य कई राजा भी बुद्ध के कार्य में सहयोगी बन गए। राजाओं के प्रभाव से अन्य अनेक छोटे-बड़े व्यक्ति इस कार्य में भाग लेने लग गए और बुद्ध के जीवनकाल में ही उनका धर्म देशव्यापी बन गया। यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात थी, क्योंकि अधिकांश महापुरुषों के जीवनकाल में उनका विरोध ही अधिक हुआ है और उनके सिद्धांतों का प्रचार प्रायः उनके तिरोधान के पश्चात् हुआ। गौतम बुद्ध के साथ ही महावीर स्वामी ने, जो बिहार के ही एक राजपुत्र थे, जैन धर्म का प्रचार आरंभ किया था। वे तपस्या और त्याग की दृष्टि से बुद्ध से भी अधिक बढ़े-चढ़े थे, उनका सिद्धांत भी दार्शनिक दृष्टि से बहुत उच्चकोटि का था, पर फिर भी उनको अधिक सफलता नहीं मिल सकी और आज भी बौद्धों की तुलना में जैनियों की संख्या नगण्य ही है। कारण यही था कि बड़े तपस्वी और त्यागी होने पर भी महावीर स्वामी बुद्ध के समान व्यावहारिक नहीं थे और उनकी तरह समयानुकूल परिवर्तन करके अपने कार्य को निरंतर अग्रसर न कर सके। बुद्ध की व्यावहारिक और समन्वय कर सकने वाली बुद्धि सभी धर्म प्रचारकों के लिए अनुकरणीय है। यदि वे कट्टरता के बजाय उदारता, समझौता, समन्वय की भावना से काम लें तो निस्संदेह अपना और दूसरों का कहीं अधिक हित साधन कर सकेंगे।

परिवार वालों को धर्म-प्रचारक बनाना

बुद्ध क्रमशः देश के विभिन्न भागों में प्रचार करते हुए अपने राज्य में भी जा पहुँचे। महाराज शुद्धोदन अपने पुत्र की महान् कीर्ति को सुनकर अपने को परम कृतकृत्य और सौभाग्यशाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझने लगे और उन्होंने बुद्ध का चिरस्मरणीय भव्य स्वागत किया। बुद्ध ने इस अवसर पर कोई प्रेम और स्नेह की भावना न दिखलाकर उसी भाव को प्रदर्शित किया, जिसे वे अन्य अपरिचित लोगों में प्रकट करते रहे थे। उन्होंने सबसे पहला कार्य तो यह किया कि अपने नियमानुसार नगर के बाहर मैदान में ठहरे और भोजन का समय होने पर अन्य भिक्षुओं के साथ भिक्षा माँगने निकले। राजा शुद्धोदन बड़े व्यथित होकर उनके पास आए और कहने लगे, "क्या मुझमें, आपको और आपके भिक्षुओं को भोजन कराने की सामर्थ्य नहीं है, जो आप घर-घर भिक्षा माँग रहे हैं ?"

बुद्ध ने कहा—"महाराज, हमारे वंश का यही धर्म है।"

राजा—"भंते ! हमारा वंश क्षत्रिय-वंश है। हमारे वंश में कभी किसी ने आज तक भिक्षा नहीं माँगी।"

बुद्ध—"महाराज ! आपका वंश क्षत्रिय वंश होगा। हमारा वंश तो 'बुद्धों' का वंश है।"

कपिलवस्तु में बुद्ध ने अपने पुत्र राहुल, पत्नी यशोधरा और भाई नंद को भी दीक्षा देकर संन्यासी बना दिया। इस प्रकार एक दृष्टि से उनके राज्य वंश का अंत ही हो गया। उन्होंने जिस बात को दूसरों के लिए कल्याणकारी समझा, उसे अपने परिवार पर भी पूरी तरह से लागू किया। पर आजकल प्रायः इससे उल्टी हालत देखने में आती है। लोग दूसरों को परोपकार, स्वार्थ, त्याग, सेवा धर्म का उपदेश देने में बड़े निपुण होते हैं; पर स्वयं विपरीत मार्ग पर ही चलते हैं, यही कारण है कि इस समय प्रचार के बहुत अधिक साधन बढ़ जाने पर भी उपदेशकों को उतनी सफलता नहीं मिलती जितनी पहले किसी प्रकार के यात्रा-साधनों और प्रेस, अखबार आदि के बिना भी प्राप्त हो जाती थी।

परमार्थ परायण कार्यकर्ताओं का संगठन

बुद्ध जानते थे कि जब तक सच्चे कार्यकर्ताओं का एक संगठन तैयार न होगा तब तक उनके सिद्धांतों का समुचित प्रसार होना संभव नहीं। यद्यपि आरंभ में ही उनके शिष्यों की संख्या कई सौ तक पहुँच गई थी और वे एक संघ के रूप में उनके साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भ्रमण करते थे, पर वे उस समय के वातावरण से प्रभावित होकर एक-दूसरे की देखा-देखी दीक्षा लेते चले गए थे, उच्च कोटि की परमार्थ भावना वाले 'भिक्षु' उनमें थोड़े ही थे। इसलिए जब राजगृह में रहने वाले संजय नामक परिव्राजक के दो विद्वान् और परमार्थ परायण शिष्य 'उपतिष्य' और 'कोलित' उनके पास परिव्राजक बनने को उपस्थित हुए, तो उन्होंने उनको प्रसन्नतापूर्वक दीक्षा दी।

ये दोनों अपने गुरु के पास रहकर परंपरागत ढंग से प्रचलित शास्त्रों का अध्ययन कर रहे थे, पर सामान्य कर्मकांड और पूजा-उपासना के विधान से उनको संतोष नहीं होता था। वे जीवन और विश्व संबंधी सच्चे ज्ञान की खोज में थे और उन्होंने आपस में प्रतिज्ञा की थी कि—"जिस किसी को पहले अमृत (ज्ञान) की प्राप्ति हो, वह दूसरे को उसकी सूचना दे।"

एक दिन उपतिष्य ने अश्वजित नामक बौद्ध भिक्षु को 'त्रिचीवर' (भिक्षुओं के तीन वस्त्र) धारण करके और पात्र लेकर राजगृह में भिक्षार्थ फिरते हुए देखा। उनके संयमपूर्ण ढंग और शांतियुक्त मुखमुद्रा को देखकर उपतिष्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उन्होंने यह जानना चाहा कि, किस गुरु के उपदेश से उनको ऐसा ज्ञान प्राप्त हुआ है ? इसलिए वे एक जिज्ञासु की भाँति उनके पीछे चलने लगे और जब अश्वजित भिक्षा ग्रहण करके अपने स्थान पर पहुँचे तो उपतिष्य ने कहा—"आयुष्मान्। आपकी आकृति अत्यंत शांत और सुंदर है। छवि-वर्ण परिशुद्ध है। आप किसको अपना गुरु बनाकर प्रव्रजित हुए हैं। आपका शास्ता अर्थात् 'मार्गदर्शक' कौन है ? आप किसके धर्म को मानते हैं ?"

अश्वजित—"आयुष्मान् ! मैं शाक्यवंशीय महाश्रमण गौतम को अपना गुरु बनाकर प्रव्रजित हुआ हूँ और उन्हीं के धर्म को मानता हूँ।"

उपतिष्य—"उनका धार्मिक सिद्धांत क्या है ?"

अश्वजित—"मैं इस धर्म में अभी नया ही प्रव्रजित हुआ हूँ, इसलिए विस्तारपूर्वक तो बतला नहीं सकता, पर संक्षेप में उनका सिद्धांत यह है"—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ये धम्मा हेतुप्पभवा तेसंहेतु तथागतोआह। तेसंचयो निरोधो एवं वादी महासमणो।

अर्थात्—"जो धर्म (बाह्याचार की दृष्टि से) निर्मित किए गए हैं, वे सब निरोध वाले (नाशवान् या अस्थायी) हैं।"

उपतिष्य ने इसको सुना तो उनके ज्ञाननेत्र खुल गए। वे समझ गए कि जो धर्माचरण ऊपरी क्रियाकांडों की पूर्ति के लिए किया जाता है तथा जो पूजा-उपासना किसी लौकिक या पारलौकिक कामना को लक्ष्य में रखकर की जाती है, उससे सच्चा आत्मज्ञान और आत्म-शांति प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए जब तक संसार के पदार्थों को क्षणभंगुर समझकर, उनके प्रति आसक्ति का त्याग नहीं किया जाएगा और समस्त जीवन व्यवहारों में परमार्थ-भावना का समावेश नहीं किया जाएगा, तब तक आत्म-मार्ग में प्रवेश हो सकना कठिन ही है। यह सोचकर वह अपने मित्र कोलित के पास पहुँचा और उसे भी यह शुभ समाचार सुनाया। उसने भी इस सिद्धांत की यथार्थता को अनुभव किया और वे उसी दिन शिष्य-भाव से बुद्ध के पास उपस्थित हुए।

बुद्ध ने उनको देखते ही समझ लिया कि ये सत्यज्ञान की खोज में ही यहाँ आए हैं और सच्चे हृदय से उसका अनुगमन करना चाहते हैं। उन्होंने उनसे पूछा तो दोनों ने विनयपूर्वक वंदना करके कहा—"भगवन् ! हमें प्रव्रजित करें, दीक्षा दें।"

बुद्ध ने कहा—"आओ भिक्षुओं ! धर्म तो स्पष्ट और सरल है। जब मनुष्य अनेक प्रकार की कामनाओं और इच्छाओं को त्यागकर कल्याण भावना से धर्म की सीधी-सादी शिक्षाओं पर आचरण करने लगता है तो उसे स्वयं ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है और वह भव-बंधनों से छुटकारा पा जाता है।"

दोनों को उसी समय प्रव्रजित करके उनके नाम सारिपुत्र और मौद्गल्यायन घोषित किए गए। उन्होंने संघ में सरल भाव से सेवा करने और सब प्रकार की परिस्थितियों में निर्विकार रहकर कर्तव्यपालन में लगे रहने का जो आदर्श उपस्थित किया, उससे बौद्ध संघ की बड़ी प्रगति हुई और जनता की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी। उनकी आंतरिक सेवा भावना का यह परिणाम हुआ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि थोड़े ही समय में वे बुद्ध के प्रमुख शिष्य और कार्यकर्ता बन गए और आज भी बुद्ध-जगत् में उनका बड़ा नाम और सम्मान है। एक बार जब बुद्ध जी ने एक अन्य प्रिय शिष्य आनंद से पूछा—"क्या तुमको सारिपुत्र अच्छे लगते हैं ?" तो उसने कहा—

"भंते ! कौन ऐसा मूर्ख, दुष्टचित्त और मूढ़ है, जिसे सारिपुत्र अच्छे नहीं लगते। आयुष्मान् सारिपुत्र पंडित है, महाप्रज्ञावान् हैं, अल्पेच्छुक हैं, संतोषी हैं, निर्लिप्त हैं, प्रयत्नशील हैं, प्रवक्ता हैं, पाप नाश करने वाले हैं। ऐसे सारिपुत्र किसे अच्छे नहीं लगेंगे ?"

कुछ वर्ष पश्चात् जब 'धर्म' की अधिकाधिक सेवा करते हुए नालंदा के समीप 'नालक' ग्राम में रोगग्रस्त होकर सारिपुत्र का देहांत हो गया तो आनंद ने बुद्ध जी के पास पहुँचकर इसकी सूचना उनको दी और कहा—"यह सुनकर मेरा शरीर तो मानो जड़ हो गया। चारों ओर अंधकार छा गया। धर्म की तो बात क्या दिशाएँ तक सूझनी बंद हो गई !"

बुद्ध—"क्यों आनंद, ऐसा किसलिए कहते हो ? क्या सारिपुत्र शील को अपने साथ ले गये ? समाधि को अपने साथ ले गये ? प्रज्ञा को अपने साथ ले गये ? विमुक्ति को अपने साथ ले गये ? मुक्ति के ज्ञान-दर्शन को अपने साथ ले गये ?"

आनंद—"नहीं भंते ! सारिपुत्र शील, समाधि, प्रज्ञा, विमुक्ति—किसी को अपने साथ नहीं ले गये, पर वे मेरे उपदेशक थे, धर्म के ज्ञाता थे, अपने सहकारियों पर उनकी बड़ी कृपा रहती थी। मैं उनकी उस करुणा, दया, कृपा का ही स्मरण करता हूँ।"

बुद्ध—"आनंद ! जिस प्रकार किसी बड़े भारी वृक्ष के खड़े रहते उसका सबसे बड़ा सारयुक्त तना टूटकर गिर जाए, उसी प्रकार बौद्ध संघ के लिए सारिपुत्र का निर्वाण हो जाना है, पर यह कब संभव है कि जिसकी रचना हुई है, जो अस्तित्त्व में आया है, उसका विनाश न हो ? नहीं आनंद ! यह नहीं हो सकता। इसलिए अपने दीपक आप बनो। किसी दूसरे का आश्रय मत देखो। धर्म को ही अपना दीपक समझो, उसका ही आश्रय ग्रहण करो।"

सदाचारी और परोपकारी महापुरुषों का सम्मान करना, उनकी सेवा-सहायता के लिए सदैव उद्यत रहना प्रत्येक सज्जन का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्तव्य है, पर अपने को उन पर इतना आश्रित करना उचित नहीं कि उनके अभाव में संसार शून्य ही जान पड़ने लगे। संसार में रहना या उसे छोड़ सकना तो मनुष्य के वश की बात नहीं, इसलिए प्रत्येक स्थिति में जगत् की नश्वरता को समझकर अपने चित्त को संतुलित रखना ही बुद्धिमान् व्यक्ति का कर्तव्य है। बुद्ध भी सारिपुत्र के महान् गुणों को पूरी तरह समझते थे और उनसे स्नेह रखते थे, पर वे यह भी जानते थे कि जो पैदा हुआ है, उसका अंत होना अनिवार्य है और ऐसे अवसर पर अत्यधिक मोह दिखाकर कर्तव्य में ढील करना उचित नहीं कहा जा सकता। इसीलिए आनंद को बुद्ध ने यही समझाया कि संसार में महत्त्व सद्गुणों का ही है और हम सारिपुत्र का सम्मान ऐसे सद्गुणों के कारण ही करते थे। इसलिए मरणोपरांत उनके प्रति सम्मान प्रकट करने का मार्ग यही है कि उन सद्गुणों का अधिक से अधिक पालन किया जाए।

स्वार्थ त्याग ही साधु का लक्षण है

सारिपुत्र के सद्गुणों का एक उदाहरण दिया गया है। बुद्ध के संघ में कुछ भिक्षु 'छह वर्गीय' कहलाते थे, जो 'संसार त्यागी' बन जाने पर भी अपने आराम का दूसरों से अधिक ध्यान रखते थे। प्रत्येक पड़ाव पर वे सबसे पहले पहुँचकर निवास, स्थान और शय्याओं पर कब्जा कर लेते थे कि—"यह हमारे उपाध्याय के लिए है, यह हमारे आचार्य के लिए है, यह हमारे लिए है।"

एक दिन उन्होंने विहार में सब ठहरने के स्थानों पर कब्जा कर लिया, जिससे सारिपुत्र शय्या न पाकर सारी रात बाहर ही किसी वृक्ष के नीचे बैठे रहे।

रात्रि के कुछ शेष रहने पर बुद्ध ने उठकर खाँसा। सारिपुत्र ने भी खाँसा।

बुद्ध—"वहाँ कौन है ?"

"भगवन् ! मैं सारिपुत्र।"

"सारिपुत्र ! तू यहाँ क्यों बैठा है ?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सारिपुत्र ने सारी बात कह सुनाई। भगवान् ने भिक्षु-संघ को संबोधित किया—"भिक्षुओं ! क्या छह वर्गीय भिक्षु सचमुच आगे-आगे जाकर विहार और शय्याएँ दखल कर लेते हैं ?"

"यह सत्य है, भगवन् !"

बुद्ध ने उनको धिक्कारते हुए कहा—"कैसे हैं ये नालायक भिक्षु, जो आगे जाकर विहार और शय्याएँ दखल कर लेते हैं। भिक्षुओं ! तुम्हें मालूम है कि प्रथम आसन, प्रथम जल, प्रथम परोसा किसे मिलना चाहिए ?"

किसी ने कहा—"भगवन्, जो अत्रिय-कुल से प्रव्रजित हुआ हो।"

"किसी ने कहा—"भगवन्, जो ब्राह्मण-कुल से प्रव्रजित हुआ हो !"

किसी ने कहा—"भगवन् जो गृहपति (वैश्य) कुल से प्रव्रजित हुआ हो।"

इसी प्रकार अन्य व्यक्तियों ने सूत्रपाठ करने वाले, विनयधर, धर्म व्याख्याता आदि के नाम बताए।

बुद्ध जी ने धार्मिक-कथा सुनाकर भिक्षुओं को समझाया—"भिक्षुओं ! जातियों, कुल के आधार पर किसी को सम्मान नहीं दिया जा सकता। इसलिए जो पहले प्रव्रजित हुआ था—वही बड़ा है, चाहे वह किसी जाति का हो। इसी नियम के अनुसार आदर-सत्कार, प्रथम आसन, प्रथम जल, प्रथम परोसा—भोजन आदि दिया जाना चाहिए।"

सार्वजनिक संस्थाओं और संगठनों में अनैक्य, फूट, असहयोग आदि का कारण यह छोटे-बड़े की भावना ही होती है। वास्तव में बड़ा तो वही है, जो ऐसी सामान्य बातों के लिए कभी मनोमालिन्य का भाव नहीं आने देता और परिस्थिति के अनुसार जो कुछ प्राप्त हो जाता है, उसी में संतुष्ट रहता है। फिर भी यदि कभी इस संबंध में निर्णय का प्रश्न उपस्थित हो जाए तो उसके लिए बुद्ध का मार्ग-दर्शन अधिकांश में उपयोगी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समता के सिद्धांत पर आचरण

अनेक स्थानों में भ्रमण करते हुए जिस समय बुद्ध वैशाली पहुँचे तो वहाँ नगर के बाहर एक सुरम्य 'आम्रवन' में ठहर गए। वह आम्रवन उस नगर की प्रमुख वेश्या 'आंबपाली' का था। जब आंबपाली ने यह समाचार सुना तो वह अपने रथ पर सवार होकर भगवान् के दर्शनों के लिए गई। उस समय उसके चित्त में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। कभी वह अपने नीच पेशे की ओर देखती थी और कभी शील के अवतार भगवान् बुद्ध की ओर। जब आम्रवन थोड़ी ही दूर रहा तो वह मर्यादा के ख्याल से रथ से उतर पड़ी और पैदल ही आम्रवन के भीतर प्रविष्ट हुई। उसने देखा कि बुद्ध भगवान् भिक्षु-समूह को उपदेश दे रहे हैं। वह भी एक ओर बैठकर सुनने लगी। सभा विसर्जित होने पर वह बुद्ध के निकट पहुँची और दूसरे दिन संघ सहित भोजन का निमंत्रण दिया। भगवान् ने मौन रहकर उसे स्वीकार कर लिया।

आंबपाली नगर को लौट रही थी, तब उसे वैशाली के लिच्छवि वंशीय सरदार बुद्ध के पड़ाव की तरफ जाते हुए मिले। उन्होंने पूछा—"आंबपाली आज क्या बात है कि रथ से रथ को धक्का देकर निकल रही हो ?"

"आर्यपुत्रों ! भगवान् ने कल के लिए मेरा भोजन स्वीकार कर लिया है।"

लिच्छवि यह सुनकर आश्चर्य चकित रह गए और कहने लगे—"आंबपाली ! यह दान हमें देने दे। हम इसके लिए एक लाख मुद्रा देंगे।"

"आर्यपुत्रों ! एक लाख तो क्या, यदि बदले में मुझे सारी वैशाली भी दे दें तो भी मैं यह निमंत्रण नहीं दे सकती।"

लिच्छवि आपस में कहने लगे—"ओह ! हमने देर कर दी, हम हार गए। इस गणिका ने हमें जीत लिया।" फिर भी वे सब इकट्ठे होकर बुद्ध की सेवा में पहुँचे और कहा—

"भंते ! संघ सहित आप कल के लिए हमारा निमंत्रण स्वीकार करें।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"लिच्छवियों ! कल के लिए तो मैंने आंबपाली का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है।" लिच्छवि चुप रह गए और नतमस्तक होकर वापस चले गए।"

दूसरे दिन भोजन का समय हो जाने पर आंबपाली ने बुद्ध के पास सूचना भेजी। वे अपने समस्त भिक्षुओं को साथ लेकर उसके घर पर पहुँचे और बिछे हुए आसनों पर बैठ गए। आंबपाली ने बड़े प्रेम से आग्रहपूर्वक भगवान् को भोजन कराया। भोजन समाप्त होने पर वह उनके सम्मुख बैठ गई और बोली—

"भंते ! मैं बुद्ध-संघ की शरण जाती हूँ और अपने आम्रवन को बुद्ध तथा भिक्षु-संघ को भेंट करती हूँ।" बुद्ध ने मौन रहकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

यद्यपि भारतीय शास्त्रों में प्राचीनकाल से ही 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का उपदेश दिया गया था, पर व्यवहार में उसका उपयोग करने वाले व्यक्तियों की संख्या अँगुलियों पर गिनने लायक थी। विशेषतः शूद्रों और स्त्रियों के साथ तो धर्मनेताओं का व्यवहार किसी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता था। बुद्ध ने इस अन्याय का अनुभव किया और अपने संघ में सदैव इन दोनों अन्याय-पीड़ित वर्गों को समान स्थान दिया। आंबपाली की घटना इस साम्य भाव का बहुत उत्कृष्ट उदाहरण है। वह स्त्री तो थी ही, साथ ही उसका पेशा भी ऐसा था, जो समाज में नीच और उपेक्षित समझा जाता है; पर बुद्ध ने उसके मनोभाव की शुद्धता को समझ लिया और उसके साथ पूर्ण शिष्टता का व्यवहार किया। इसके परिणाम-स्वरूप आंबपाली का हृदय पूर्ण शुद्ध हो गया और उसने अपनी धन-संपत्ति ही नहीं, समस्त जीवन धर्म और समाज की सेवा के लिए अर्पण कर दिया। इस उदाहरण ने अन्य हजारों स्त्रियों को भी प्रेरणा दी और वे भी बुद्ध-संघ की अनुयायी और सहायिका बन गईं। इसके परिणामस्वरूप समाज के संस्कार और प्रगति में इतनी अधिक सहायता मिली, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिसंगत धर्म ही श्रेष्ठ है

धर्म का विषय सदा से विवादग्रस्त रहा है। प्रत्येक धर्मनेता या प्रचारक अपने सिद्धांतों और आदर्शों को सर्वश्रेष्ठ मानता है। इसके लिए वह प्रायः दूसरे के मतों का खंडन भी करने लग जाता है। बुद्ध के समय में ऐसी ही स्थिति थी। अब वे 'केस पुत्तिय' नामक ब्राह्मणों के ग्राम में पहुँचे, तो वहाँ 'कालामा' गोत्र के लोगों ने उनसे कहा—"भंते ! हमारे ग्राम में कुछ ब्राह्मण श्रमण (साधु) आते हैं, वे अपने मतों का समर्थन करते हैं और दूसरे मतों का खंडन। फिर दूसरे आते हैं, वे अपने सिद्धांतों का समर्थन करते हैं और दूसरों के सिद्धांतों का खंडन। भंते ! हम कैसे जानें कि कौन सही है और कौन गलत है ?"

बुद्ध ने कहा—"कालामा भाइयों। संदेह उत्पन्न होना स्वाभाविक है। किसी बात में केवल इस कारण विश्वास मत करो कि बहुत-से लोग उसको मानते हैं। इस कारण विश्वास मत करो कि वह तुम्हारे आचार्यों की कही हुई बात है। इस आधार पर विश्वास मत करो कि वह तुम्हारे धर्मग्रंथों में लिखी हैं। वरन् प्रत्येक बात को अपने व्यक्तिगत अनुभव की कसौटी पर जाँचो। यदि वह तुम्हें अपने तथा औरों के लिए हितकर जान पड़े, तो उसे मान लो। न जान पड़े, तो मत मानो।"

धर्म के निर्णय के विषय में बुद्ध की यह सम्मति बहुत उचित और स्पष्ट है, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। यह सत्य है कि साधारण व्यक्ति धार्मिक समस्याओं पर ठीक-ठीक विचार नहीं कर सकते और किसी गुत्थी को सुलझाने के लिए उनको विद्वानों की सहायता ही लेनी पड़ती है। तो भी प्रत्येक विषय में स्वयं विचार करना भी अत्यावश्यक है और यदि कोई बात बुद्धि के विपरीत, तर्क के विरुद्ध जान पड़े तो उस पर अच्छी तरह विचार-विमर्श किया जाए। केवल शास्त्राज्ञा, पंडितों की मान्यता, गुरुजनों के आदेश के आधार पर किसी भी बात को बिना सोचे-विचारे स्वीकार कर लेना अंध-विश्वास ही कहा जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म के विषय में इस प्रकार का मतभेद कोई नई बात नहीं है। वैदिक-काल और स्मृति-काल में भी भिन्न-भिन्न ऋषियों का मत पृथक्-पृथक् था। वैशेषिक, सांख्य और वेदांत दर्शनों के मतों में परस्पर बहुत अंतर पाया जाता है। शैव और वैष्णव एक-दूसरे के संप्रदायों को सर्वथा अग्राह्य बतलाते हैं। चार्वाक आदि मत वालों ने तो वेदों की खुलकर निंदा की है और उनके रचयिताओं के लिए 'भांड, धूर्त, निशाचर' आदि अपशब्दों का प्रयोग करने में भी संकोच नहीं किया है। इसलिए किसी भी संप्रदाय के संस्थापक या धर्म-सिद्धांत के प्रचारक के लिए बिना विचारे निर्भ्रांत स्वीकार कर लेना या उनके उपदेशों को आँख बंद करके सत्य मान लेना, कोई प्रशंसा की बात नहीं है। इसलिए अपने गुरुओं, धर्मोपदेशकों के प्रति सब प्रकार से श्रद्धा-भक्ति रखते हुए भी उनके विचारों को जाँच करके ग्रहण करना बुरा नहीं कहा जा सकता।

सहकारी-जीवन की आवश्यकता

बुद्ध पाँच सौ भिक्षुओं को लेकर कीटागिरि की ओर चले। सारिपुत्र और मौद्गल्यायन भी उनके साथ थे। जब कीटागिरि निवासी भिक्षुओं ने, जिनमें अश्वजित और पुनर्वसु प्रमुख थे, यह समाचार सुना तो उन्होंने परस्पर सलाह की कि सारिपुत्र तथा मौद्गल्यायन की नीयत ठीक नहीं है—इसलिए ऐसा उपाय किया जाए कि उनको शयनासन प्राप्त न हो सके। यह सोचकर उन्होंने संघ के समस्त प्रयोजनीय पदार्थों को आपस में बाँट लिया। जब बुद्ध संघ के कुछ व्यक्ति आगे बढ़कर कीटागिरि पहुँचे और वहाँ के भिक्षुओं से भगवान् बुद्ध, सारिपुत्र तथा मौद्गल्यायन के लिए शयनासन की व्यवस्था करने को कहा, तो उन्होंने कहा—

"आवुसों ! यहाँ सांघिक शयनासन नहीं है। हमने सभी सांघिक को, संपत्ति को बाँट लिया है। भगवान् का स्वागत है। वे चाहे जिस विहार में ठहरें। सारिपुत्र तथा मौद्गल्यायन पाथेच्छुक हैं, हम उन्हें शयनासन नहीं देंगे।" सारिपुत्र ने उनसे पूछा—

"क्या आवुसों ! तुमने संघ की शैय्याएँ बाँट ली हैं ?"

"हाँ, हमने ऐसा ही किया है।" अश्वजित ने कहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भिक्षुओं ने जाकर समस्त समाचार भगवान् बुद्ध की सेवा में निवेदन किया, तो उन्होंने ऐसा अनुचित कर्म करने वाले भिक्षुओं की निंदा करते हुए कहा—"भिक्षुओं ! पाँच वस्तुएँ बाँटी नहीं जा सकतीं—(१) आराम या आराम की वस्तु, (२) विहार—निवासस्थान, (३) मंच, पीठ, गद्दी, तकिया, (४) लौह-कुभी, (५) बल्ली, बाँस, मूँज।

साधु का एक बहुत बड़ा लक्षण 'अपरिग्रह' भी है। जो व्यक्ति साधु वेष धारण करके भी अपनी सुख-सुविधा के लिए हर तरह से सुख-सामग्री एकत्रित करता रहे, उसे ढोंगी या हरामखोर ही कहना पड़ेगा, क्योंकि यदि उसे सुख-सामग्रियों की इतनी लालसा है तो गृहस्थ-जीवन को त्यागकर भिक्षु बनने की आवश्यकता ही क्या थी ? गृहस्थ में अगर वह परिश्रम करके धनोपार्जन करता और उससे इच्छानुसार आराम का जीवन व्यतीत करता तो उसकी तरफ कोई विशेष ध्यान न देता। पर यदि कोई व्यक्ति 'साधु, बनकर जीविकोपार्जन के लिए परिश्रम करना बंद कर दे और तब भी सुख-सामग्री के संग्रह करने, उन पर अपना स्वामित्व स्थापित करने की लालसा या फिकर में लगा रहे, तो वह समाज के आगे एक दूषित उदाहरण उपस्थित करने का दोषी ही समझा जाएगा।

साधु आश्रम का एक बड़ा लाभ सहकारी-जीवन व्यतीत करना है। गृहस्थ आश्रम में तो सामाजिक परिस्थितियों और व्यक्तिगत कारणों से भी मनुष्य को अपने व्यवहार की अधिकांश वस्तुएँ पृथक् रखनी पड़ती हैं, पर साधु के साथ ऐसा कोई बंधन नहीं होता और वह चाहे व्यक्तिगत पदार्थों का भार ढोने और उनकी रक्षा करने के झंझट से सहज में ही छुटकारा पा सकता है। जैन साधुओं में इस तथ्य पर बहुत अधिक जोर दिया है और उनके सामने यह आदर्श रखा गया है कि—यदि उनमें सामर्थ्य हो तो वे अपनी आवश्यक वस्तुओं की संख्या घटाते-घटाते उनका पूर्ण रूप से अंत कर सकते हैं। तब उनके पास तो अन्न का एक दाना और न एक बालिश्त वस्त्र शेष रहता है और वे अपना भार सर्वथा प्रकृति पर और समाज पर छोड़कर निश्चिंत हो जाते हैं। यदि इस सीमा तक आगे न बढ़ा जाए तो भी साधुओं का यह कर्तव्य—धर्म अवश्य है कि अपने पास रहने वाली वस्तुओं की संख्या कम से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कम रखें और निवास, शैय्या, भोजन-सामग्री आदि की व्यवस्था सामूहिक रूप से ही करें। इससे थोड़े पदार्थों में ही बहुत-से लोगों का काम चल सकता है और साधु अनेक वस्तुओं का बोझा ढोने और उनकी देख-भाल करने की चिंता से मुक्त रह सकता है। आगे चलकर समाज के अन्य व्यक्ति भी इस आदर्श को अपना सकते हैं और अपनी परिस्थितियों तथा सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए सामूहिक-जीवन का न्यूनाधिक भाग या अंश ले सकते हैं।

इसमें संदेह नहीं कि इस प्रकार का सामूहिक-जीवन सभ्यता और प्रगति का एक बहुत बड़ा साधन है। इसमें प्रत्येक पदार्थ की उपयोगिता कई गुनी बढ़ जाती है और उससे अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सकता है। जो लोग अकेले बड़े पदार्थों की व्यवस्था कर सकने में असमर्थ होते हैं, वे भी किसी रूप में उनके प्रयोग की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। इससे व्यक्तिगत लालसा, स्वामित्व, प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या-द्वेष आदि हानिकारक प्रवृत्तियों में कमी आती है। इसी तथ्य को दृष्टिगोचर रखकर वेदों ने गाया है—

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
समानो मंत्रः समिति समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानिवः।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासतिः।

अर्थात्—"तुम लोग साथ-साथ चलो, साथ बोलो, तुम समान मन वाले होओ, तुम्हारे विचार भी समान होवें। तुम्हारा कर्म समान हो, तुम्हारे हृदय और मन भी समान हों, तुम समान मति और रुचि वाले होकर सब प्रकार से सुसंगठित हो।"

बुद्ध-संघ में भी आरंभ में त्याग का आदर्श बड़ा ऊँचा रखा गया था और ऐसी व्यवस्था की गई थी कि गृहस्थों द्वारा त्यागी गई अल्प उपयोगी वस्तुओं से ही भिक्षु लोग अपना काम चला लें और समाज के ऊपर अपना भार कम से कम आने दें। बौद्ध भिक्षु केवल वस्त्र पहनने को, सोने को एक गुदड़ी और खाने-पीने के लिए एक काष्ठ-पात्र के सिवाय कुछ न रखते थे। पर बाद में इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भिक्षुओं में भी संग्रह करने की प्रवृत्ति बढ़ती गई और एक समय ऐसा आया जब बौद्ध-मठों में लाखों-करोड़ों की संपत्ति इकट्ठी हो गई जैसा कि आज हम बहुसंख्यक हिंदू-मंदिरों में देख रहे हैं। संपत्ति का इस प्रकार एकत्र होना निश्चित रूप से पतन तथा भ्रष्टाचार का कारण बनता है और वही बात बौद्ध-संघ के साथ हुई। संपत्ति के बढ़ने से उनमें भ्रष्टता और तरह-तरह के दोष उत्पन्न हो गए और उनका नाश होने लग गया। बुद्ध इस तथ्य को अच्छी तरह समझते थे और इसलिए उन्होंने एक मठ में इसकी थोड़ी-सी प्रवृत्ति देखते ही उसकी निंदा की और उसे रोकने का आदेश दे दिया। जब तक बौद्ध-संघ इस पर आचरण करता रहा तब तक इसकी निरंतर प्रगति होती गई और वह दुनिया के दूर-दूर के स्थानों तक फैल गया।

बुद्ध के अंतिम दिन

इस प्रकार बुद्ध ने लगातार ४५ वर्ष तक देश भर में भ्रमण करके जनता को 'सत्य-धर्म' का उपदेश दिया और उनको अनेक कुरीतियों एवं अंध-विश्वासों से छुड़ाकर कल्याणकारी मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इसमें उनको काफी परिश्रम करना पड़ता था और अनेक कठिनाइयाँ भी सहन करनी पड़ती थीं। सभी सुधार के कामों में अनेक दुष्ट प्रकृति के लोग बाधा पहुँचाने को भी उतारू हो जाते हैं। बुद्ध को भी कभी-कभी ऐसे विरोध को सहन करना पड़ता था। जब वे 'जेतवन' नामक स्थान में थे तो उनके कुछ शत्रुओं ने सुंदरी नामक बौद्ध भिक्षुणी को लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया और उससे यह कहलाया कि—"मैं बुद्ध के पास जाया करती हूँ", अर्थात् मेरे साथ उनका अवैध संबंध है ! जब वह अनेक लोगों के सामने यह बात कह चुकी तो उन्हीं दुष्ट लोगों ने चुपके से उसे मार डाला और यह शोर मचाया कि बुद्ध के आदमियों ने इसे मार दिया है।

उन्होंने अपनी तरफ से जाल तो बहुत बड़ा रचा था, पर बुद्ध के अब तक की जीवन-चर्या और महान् त्याग को जानने के कारण किसी ने इस पर जल्दी विश्वास न किया। जब यह समाचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाराज बिंबिसार के पास पहुँचा तो उन्होंने इस समाचार को फैलाने वालों को ही पकड़ लिया और उनको धमकाकर सच्ची बात पूछी। लोग शराब के नशे में चूर थे, इसलिए अपने आप ही अपना कसूर मान लिया और षड्यंत्र की पूरी कहानी प्रकट कर दी। फिर उनको अपनी करतूत पर इतनी ग्लानि हुई कि वे बुद्ध की शरण में गए और क्षमा माँगने लगे। निर्विकार चित्त भगवान् बुद्ध ने उनको भी क्षमा कर दिया और संघ में शामिल होने की अनुमति दे दी।

इसी प्रकार एक बार वे अकेले ही यात्रा करते हुए अंगुलिमाल डाकू के सामने जा पहुँचे। यह बड़ा क्रूर और भयंकर व्यक्ति था और जिन व्यक्तियों को मारता था, उनकी एक अंगुली काटकर अपने गले की माला में शामिल कर लेता था। इस प्रकार वह लगभग एक हजार व्यक्तियों को मार चुका था। वह बुद्ध को मारने को उद्यत हुआ, पर उन्होंने निर्भय भाव से उसे इस प्रकार उसकी गलती समझाई कि उसकी आँखें खुल गईं और वह अपने कुकृत्य पर पश्चात्ताप करने लगा। बुद्ध ने उसे भी धर्मोपदेश देकर बुद्ध संघ में सम्मिलित कर लिया और आगे चलकर वह एक बड़ा धर्म-प्रचारक बन गया।

सुभद्र की कथा

इस प्रकार भगवान् बुद्ध जीवन भर अज्ञानी और भूले-भटकों को सद्मार्ग दिखलाकर जब वृद्धावस्था और निर्बलता के कारण मृत्यु शैय्या पर पड़ गए तो सुभद्र नामक परिव्राजक ने यह समाचार सुना। उसने सोचा कि बुद्ध जैसे महापुरुष रोज-रोज पैदा नहीं हुआ करते। मेरी धर्म संबंधी शंकाओं के निवृत्त होने का अवसर फिर कभी न मिल सकेगा। इसलिए वह शालवन में, जहाँ भगवान् बुद्ध उस समय विश्राम कर रहे थे, जा पहुँचा और आनंद से कहा—"मेरे हृदय में धर्म संबंधी कुछ शंकाएँ हैं। यदि उन्हें इस समय न मिटा सका तो वे फिर कभी न मिट सकेंगी। कृपया मुझे भगवान् के दर्शन कराइए।" उस समय आनंद ने कहा—

"सुभद्र ! यह भगवान् से शंका समाधान करने का समय नहीं है। भगवान् निर्वाण-शैय्या पर हैं। अब उन्हें कष्ट मत दो।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"आनंद ! मुझे भगवान् के दर्शन कर लेने दो।" सुभद्र ने कहा।

"सुभद्र ! अब उन्हें कष्ट मत दो।" पुनः आनंद ने कहा।

आनंद और सुभद्र के कथोपकथन की अस्पष्ट ध्वनि बुद्ध के कानों में पहुँची। जिन्होंने आजीवन सब प्रकार के लोगों पर सद्विचारों की वर्षा की हो, वह अंतिम समय में उसके विपरीत कैसे चल सकते थे ? उन्होंने कहा—"आनंद ! सुभद्र को मत रोको। आने दो। वह ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा से आया है, मुझे कष्ट देने के विचार से नहीं।"

सुभद्र ने पास जाकर करुणा की उस शांत मूर्ति को देखा। तथागत के उपदेश उसके हृदय में तुरंत प्रविष्ट हो गए। उसने कहा—"भंते ? मैं बुद्ध धर्म और संघ की शरण में जाता हूँ। मुझे आप भिक्षु बना लें।"

बुद्ध ने कहा—"सुभद्र ! संघ का नियम है कि किसी दूसरे संप्रदाय का प्रव्रजित व्यक्ति यदि बौद्ध संघ में सम्मिलित होना चाहे तो उसे चार मास तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।"

"भंते ! चार मास तो क्या, मैं चार वर्ष तक प्रतीक्षा करने को तैयार हूँ।"

बुद्ध—"तो आनंद ! सुभद्र को अभी प्रव्रजित करो।" सुभद्र ही बुद्ध भगवान् का अंतिम शिष्य हुआ।"

मृत्यु को निकट खड़ी देखकर भी जो परोपकार से मुख न मोड़े—वे ही सच्चे महापुरुष और आत्मज्ञानी हैं। नहीं तो अधिकांश व्यक्ति प्राण-संकट की अवस्था में सब कुछ भूलकर जान बचाने के लिए हाथ-पैर पीटने लगते हैं। सामान्य व्यक्ति सदा 'आप मरे तो जग डूबा' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले होते हैं, पर आत्म तत्त्व के वास्तविक ज्ञाता मृत्यु की नाममात्र को भी चिंता नहीं करते और उस समय भी जितने क्षण किसी की सेवा-सहायता में लग सकें, उसे ही मरते-मरते जीवन का सार समझते हैं। बुद्ध भगवान् का सुभद्र की शंका समाधान करना एक ऐसा ही कार्य था। उनके इस उदाहरण से हमको यह शिक्षा मिलती है कि—मृत्यु का भय निरर्थक है और उसकी संभावना देखकर घबरा जाना, कर्तव्य-कर्म से विमुख हो जाना और भी हेय है। जब वह एक अनिवार्य बात है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उसको भय अथवा घबराहट द्वारा हटाया भी नहीं जा सकता तो हम क्यों न उसकी तरफ से निर्भय रहें। वह कब आएगी, इसकी परवाह न करके अंतिम क्षण तक कर्तव्य पालन की भावना को जीवित तथा जाग्रत् रखना ही श्रेष्ठ व्यक्तियों का लक्षण है और वे जीवन का लाभ डरने और भागने वाले लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक प्राप्त कर लेते हैं।

बौद्ध धर्म की वृद्धि और ह्रास

बुद्ध धर्म का प्रचार समस्त देश में और विदेशों में भी इतनी तेजी से बढ़ा कि उसे देखकर अधिकांश लोगों को आश्चर्य होने लगा। पर इसका कारण यही था कि उस समय पंडित और पुरोहितों ने अपने स्वार्थ के लिए प्राचीन धर्म को बहुत उलझनपूर्ण और आडंबर वाला बना दिया था। शास्त्रों में तो यह कहा गया है कि, धर्म हृदय की चीज है और मनुष्य को इसका अनुसरण स्वाभाविक रूप से करना चाहिए। पर उस समय के 'धर्म-व्यवसायियों' ने उसे ऐसा रूप दे दिया था कि कोई व्यक्ति अपने मन से स्वतंत्रतापूर्वक कोई धर्मकृत्य कर ही नहीं सकता था। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो इन पंडित-पुरोहितों ने अपने को 'भगवान् का एजेंट' बना लिया था और वे कहते थे कि—"हमारे धर्मकृत्य कराए बिना कोई भगवान् को पा ही नहीं सकता।" इस प्रकार वे भगवान् और एक सामान्य व्यक्ति के बीच में बाधास्वरूप बन बैठे थे। उन्होंने यज्ञ और हवन को ही नहीं वरन् पूजा-पाठ, भजन, उपासना, दान, व्रत, तीर्थ सब में कोई न कोई ऐसी शर्त लगा दी थी कि मनुष्य किसी धर्म-कार्य को स्वयं कर सकने में कठिनाई का अनुभव करते थे और उसमें पंडित-पुरोहितों की सहायता लेना आवश्यक था। ये लोग अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए लोगों को तरह-तरह से व्यर्थ के क्रियाओं में फँसाकर परेशान करते थे, इससे लोगों में धर्म के प्रति विरक्ति का भाव उत्पन्न होने लग गया।

यह सत्य है कि वेदों और उपनिषदों के धर्म सिद्धांत बहुत ऊँचे थे और बौद्ध धर्म में उनसे बढ़कर ज्ञान-संबंधी कोई बात न थी, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस समय वेद और उपनिषदों का प्रचार प्रायः समाप्त हो गया था। सामान्य मनुष्यों की तो क्या बात स्वयं पंडित-पुरोहित भी उनसे अनजान थे। उन्होंने उनकी कुछ बातों को अपने अनुकूल रूप में बदलकर उन्हीं को 'धर्म' का नाम दे दिया था और इसी से धन कमाकर आराम की जिंदगी बिताने लगे थे। यही कारण है कि जब बुद्ध ने प्राचीन ज्ञान-मार्ग की बातों को सीधे और सरल रूप में कहना आरंभ किया और धर्म के मार्ग को प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ बना दिया तो लोग एकाएक उनकी तरफ आकर्षित हो गए। सच पूछा जाए तो उस समय स्वार्थियों ने बाहर से 'धर्म' 'धर्म' पुकारते हुए भीतर ही भीतर, उसे ऐसा खोखला और विकारग्रस्त कर दिया था कि समाज की आत्मा तमसावृत और पतित हो गई थी और किसी आश्रय के लिए व्याकुल हो रही थी। बुद्ध की शिक्षाओं में उनको प्रकाश की रेखा दिखलाई पड़ी और वह बिना विशेष प्रयत्न के उनके चारों ओर इकट्ठी हो गई। एक नया धर्म अपने आप चल पड़ा।

बुद्ध के उपदेश इतने ऊँचे और साथ ही सरल भी थे कि विद्वान् और अशिक्षित दोनों को उसमें अपने योग्य तत्त्व की बातें मिल जाती थीं। इसलिए जहाँ शूद्र, कारीगर, स्त्रियाँ उसमें सम्मिलित हुए, वहाँ अनेक विद्वान्, प्रतिभाशाली तथा बड़ी पदवी वाले भी उनके अनुयायी बन गए। इन सबके सहयोग से बौद्ध धर्म को शीघ्रतापूर्वक दूर-दूर तक फैलने में बहुत सहायता मिली। इस रहस्य का स्पष्टीकरण करते हुए विन्सेंट स्मिथ नामक प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहास लेखक ने यह मत प्रकट किया है—

"उस समय 'ब्राह्मणों' के बड़प्पन से लोग ऊब गए थे। वे किसी न किसी प्रकार उनसे निस्तार चाहते थे। क्षत्रिय भी हृदय में उनसे बहुत असंतुष्ट थे। इसीलिए जब उन्होंने अपने ही वर्ण के एक महापुरुष को धर्म उपदेश देते देखा तो वे जान-बूझकर उसकी बढ़ती की चेष्टा करने लगे, इसीलिए बिंबिसार, प्रसेनजित जैसे क्षत्रिय नरेश तुरंत ही बुद्ध के समर्थक बन गए।" क्षत्रियों के कर्मकांडी ब्राह्मणों से असंतुष्ट होने का एक कारण यह भी था कि वे राजाओं में यज्ञ की प्रतियोगिता उत्पन्न करके उनकी संपत्ति को स्वयं हड़प लेते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इससे राजाओं को आर्थिक कठिनाई उठानी पड़ती थी। जब उन्होंने इस तथ्य को समझ लिया तो वे ब्राह्मणों के विरोधी बन गए।

पतन के कारण

जब तक बौद्ध धर्म के नेता इन सत्य-नियमों पर चलते रहे, उनकी निरंतर उन्नति होती रही और वह समस्त भारत में ही नहीं—चीन, जापान, स्याम, लंका, अफगानिस्तान और एशिया के पश्चिमी देशों तक फैल गया। अशोक जैसा इतिहास प्रसिद्ध सम्राट् उसमें शामिल हो गया और उसने अपने विशाल-साधन इस कार्य में लगाकर बौद्ध-धर्म को विश्वव्यापी बना दिया। पर जब बौद्धों में भी विकृतियाँ उत्पन्न होने लगीं और उनके 'भिक्षु' अपने आराम और लाभ के लिए वैसे ही काम करने लग गए, जिनके कारण ब्राह्मणों में हीनता आई थी तो वह भी गिरने लग गया।

कुछ विद्वानों के कथनानुसार भारतवर्ष से बौद्ध धर्म के लोप हो जाने का कारण 'ब्राह्मणों का विरोध' ही था। "ब्राह्मणों ने भारत में आरंभ में जो धर्म फैलाया था और संस्कृति का प्रचार किया था। वह इतनी 'सनातन' थी कि कोशिश करने पर भी बौद्ध धर्म उसे पूर्णतया न मिटा सका। अपनी गलती का कुपरिणाम भोगकर ब्राह्मण जब पुनः सँभले तो वे बौद्ध धर्म की बातों को अपने ही शास्त्रों में ढूँढ़कर बतलाने लगे और अपने अनुयायियों को उनका उपदेश देने लगे।"

बौद्ध-धर्म का मुकाबला करने के लिए हिंदू धर्म के विद्वानों ने प्राचीन कर्मकांड के स्थान पर ज्ञान-मार्ग और भक्ति-मार्ग का प्रचार करना आरंभ किया। कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य जैसे विद्वानों ने मीमांसा और वेदांत जैसे दर्शनों का प्रतिपादन करके बौद्ध धर्म के तत्त्वज्ञान को दबाया और रामानुज, विष्णु स्वामी आदि वैष्णव सिद्धांत वालों ने भक्ति-मार्ग द्वारा बौद्धों के व्यवहार—धर्म से बढ़कर प्रभावशाली और छोटे-से छोटे व्यक्ति को अपने भीतर स्थान देने वाला विधान खोज निकाला। साथ ही अनेक हिंदू राजा भी इन धर्म-प्रचारकों की सहायतार्थ खड़े हो गए। इस सबका परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार बौद्ध धर्म अकस्मात् बढ़कर बड़ा बन गया और देश भर में छा गया, उसी प्रकार जब वह निर्बल पड़ने लगा, तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी जड़ उखड़ते भी देर न लगी। यह एक आश्चर्य की ही बात है कि जो धर्म अभी तक अनेक दूरवर्ती देशों में फैला हुआ था और जिसके अनुयायियों की संख्या अधिकांश अन्य धर्म वालों से अधिक थी, वह भारत से इस प्रकार लोप हो गया कि उसका नाम सुनाई पड़ना भी बंद हो गया। लोग बौद्ध धर्म को पूर्ण रूप से एक विदेशी-धर्म ही मानने लगे। पिछले साठ-सत्तर वर्षों से कुछ उदार विचारों के हिंदुओं ने ही उसकी चर्चा करना आरंभ कर दी है और उसके कुछ धर्म-स्थानों का भी पुनरुद्धार किया है।

इस विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि—किसी भी मत या संप्रदाय का उत्थान सद्गुणों और सच्चाई पर ही निर्भर है। संसार के सभी प्रमुख धर्म लोगों को निम्न स्तर की अवस्था से निकालकर उच्च अवस्था को प्राप्त करने के उद्देश्य से स्थापित किए गए हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम आदि मजहब आज चाहे जिस दशा में हों, पर आरंभ में सबने अपने अनुयायियों को श्रेष्ठ और समयानुकुल मार्ग पर चलाकर उनका कल्याण साधन ही किया था। पर काल-क्रम से सभी में कुछ व्यक्तियों या समुदाय विशेष की स्वार्थपरता के कारण विकार उत्पन्न हुए और तब उनका पतन होने लगा। तब फिर किन्हीं व्यक्तियों के हृदय में अपने धर्म की दुरावस्था का ख्याल आया और वे लोगों को गलत तथा हानिकारक मार्ग से हटाकर धर्म-संस्कार का प्रयत्न करने लगे। बुद्ध भी इस बात को समझते थे और इसलिए यह व्यवस्था कर गए थे कि प्रत्येक सौ वर्ष पश्चात् संसार भर के बौद्ध प्रतिनिधियों की एक बड़ी सभा की जाए और उसमें अपने धर्म तथा धर्मानुयायियों की दशा पर पूर्ण विचार करके जो दोष जान पड़े उनको दूर किया जाए और नवीन समयोपयोगी नियमों को प्रचलित किया जाए। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अगर आवश्यक समझा जाए तो पुरानी प्रथाओं और नियमों से कुछ छोटी-मोटी बातों को छोड़ा और बदला भी जा सकता है।

बौद्ध धर्माचार्यों द्वारा इसी बुद्धिसंगत व्यवस्था पर चलने और रूढ़िवादिता बचे रहने का यह परिणाम हुआ कि बौद्ध कई सौ वर्ष तक निरंतर बढ़ता रहा और संसार के दूरवर्ती देशों के निवासी आग्रहपूर्वक इस देश में आकर उसकी शिक्षा प्राप्त करके अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ उसका प्रचार करते रहे। जीवित और लोक-कल्याण की भावना से अनुप्राणित धर्म का यही लक्षण है कि वह निरर्थक या देश-काल के प्रतिकूल रीति-रिवाजों के पालन का प्राचीनता या परंपरा के नाम पर वह आग्रह नहीं करता। वरन् सदा आत्म-निरीक्षण करता रहता है और किसी कारणवश अपने धर्म में, अपने समाज में, अपनी जाति में यदि कोई बुराई, हानिकारक प्रथा-नियम उत्पन्न हो गए हों तो उनको छोड़ने, उनका सुधार करने में आगा-पीछा नहीं करता। इसलिए बुद्ध की सबसे बड़ी शिक्षा यही है कि—मनुष्यों को अपना धार्मिक, सामाजिक आचरण सदैव कल्याणकारी और समयानुकूल नियमों पर आधारित रखना चाहिए। जो समाज, मजहब इस प्रकार अपने दोषों, विकारों को सदैव दूर करते रहते हैं, उनको ही 'जीवित' समझना चाहिए और वे ही संसार में सफलता और उच्च पद प्राप्त करते हैं।

वर्तमान समय में हिंदू धर्म में जो सबसे बड़ी त्रुटि उत्पन्न हो गई है। वह यही है कि इसने आत्म-निरीक्षण की प्रवृत्ति को सर्वथा त्याग दिया है और 'लकीर के फकीर' बने रहने को ही धर्म का एक प्रमुख लक्षण मान लिया है। अधिकांश लोगों का दृष्टिकोण तो ऐसा सीमित हो गया है कि वे किसी अत्यंत साधारण प्रथा-परंपरा को भी, जो इन्हीं सौ-दो सौ वर्षों में किसी कारणवश प्रचलित हो गई है। पर आजकल स्पष्टतः समय के विपरीत और हानिकारक सिद्ध हो रही है, छोड़ना 'धर्म विरुद्ध' समझते हैं। इस समय बाल-विवाह, मृत्युभोज, वैवाहिक अपव्यय, छुआछूत, चार वर्णों के स्थान पर आठ हजार जातियाँ आदि अनेक हानिकारक प्रवृत्तियाँ हिंदू-समाज में घुस गई हैं, पर जैसे ही उनके सुधार की बात उठाई जाती है, लोग 'धर्म के डूबने की पुकार' मचाने लग जाते हैं। बुद्ध भगवान् के उपदेशों पर ध्यान देकर हम इतना समझ सकते हैं कि—वास्तविक धर्म आत्मोत्थान और चरित्र-निर्माण में है, न कि सामाजिक लौकिक प्रथाओं में। यदि हम इस तथ्य को समझ लें और परंपरा तथा रूढ़ियों के नाम पर जो कूड़ा-कबाड़ हमारे समाज में भर गया है, उसे साफ कर डालें तो हमारे सब निर्बलताएँ दूर करके प्राचीन काल की तरह हम फिर उन्नति की दौड़ में अन्य जातियों से अग्रगामी बन सकते हैं।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org